आजादी का अमृत महोत्सव (स्वतंत्रता संघर्ष में जनजातियों की भूमिका)

श्रीमती मनीषा यादव सहायक प्राध्यापक (इतिहास) शासकीय महाविधालय नरेला, भोपाल मो 9770630188

ईमेल– yadav-mani786@gmail-com

मनुष्य जाति ने अपनी सृष्टि के विकास के सहित अपने समुदायों का गठन किया है। उनमें से समर्थों ने अपने जीवन–यापन के सुख–सुभीते तथा महत्ता ज्ञापन के सूत्रों से शक्तिहीनों के प्रति आरंभ में अत्याचार, अन्याय, उत्पीड़न आरंभ किए। परंतु सामाजिक प्रकृति के मनुष्य समुदायों के निकट परवर्ती काल में परस्पर सामंजस्य–समीकरण, समन्वय आदि का आश्रय भी ग्रहण किया। यह मानव मस्तिष्क की प्रवृति है, कि जिन समुदायों को आदिम अनुसूचित प्रजातियों की संज्ञा प्राप्त है, और जिन्हें आर्यों की यह सामाजिकता–सांस्कृतिक–समीकरण उनके पारस्पर्य का है।

विधाता ने सम्पूर्ण मानव जाति का सृजन एक समान किया है। उनके मानसिक स्तर, शारीरिक गठन अथवा विकास में मौलिक रूप से कोई अंतर प्रत्यंतर नहीं था। कर्म एवं व्यवसाय ने भिन्नता आरंभ की, उच्च एवं निम्न का भाव जागृत इसी कारण हुआ। परंतु पारस्परिक सामाजिक, सांस्कृतिक सामंजस्य से निरपेक्ष आदिम प्रजातियों ने जिनमें एक अनुसूचित जाति सम्मिलित है। एकांत, निर्जन, वन पर्वतमय अंचलों में अपनी प्रकृति तथा अपने सुख–स्वभाव के अनुरूप निवास आरंभ किया।

अवधि काल में परिवर्तन व्यतिक्रम में हुआ। नृपतियों का आविर्भाव हुआ। नृपति उनके अधिकारी बनें। समर्थ एवं बुद्धिमान ने आदिम अनुसूचित प्रजातियों के प्रति सहिष्णु व्यवहार भी किया और अतिक्रमण भी किए। परंतु आदिम प्रजातियों के नियंत्रित जीवन–यापन के वे बाधक नहीं बनें। आदिम प्रजातियों बाह्ययिक संसार से अधिक तात्पर्य नहीं था। वे वाणी उत्पादन, कंद–मूल, पारस्परिक विनिमय के आधार पर अपना निर्वाह करते आए हैं। प्रकृति उनकी, भूमि उनकी, वनोपयोग उनके, पुरुषानुक्रमिक अर्जन उनके, क्रय–विक्रय से उनका लेना–देना नहीं था। परंतु नृपतियों की सामाजिकता से उनका निरपेक्ष सहयोग भी था।अर्थात जनजातीय लोग सरल, शांतिप्रिय और मेहनती होते हैं। वन क्षेत्रों में स्थित अपने निवास स्थान में प्राकृतिक सद्भाव के साथ रहते हैं। वे अपनी पहचान पर गर्व करते हैं। जनजाति लोगों ने प्राचीन काल से अपनी स्वतंत्रता और विशिष्ट परंपराओं, सामाजिक प्रथाओं और आर्थिक प्रणालियों को संरक्षित रखा है।

परंपरागत ढंग से जीवन व्यतीत करने के कारण आदिम जनजाति के लोग गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करते हैं। इनकी संख्या वर्तमान में भि अधिक है। ये आज भी काम साक्षर है तो 200 वर्षों पूर्व तो इनकी स्थिति सोचनीय होगी। यह अपने चरित्र के अवश्य धनी है लेकिन शोषण के शिकार हमेशा रहे। लेकिन इन्होंने अपने शोषण के खिलाफ हमेशा संघर्ष किया। वह हमेशा उन्मुक्त एवं सुखद जीवन–यापन में अंग्रेजों ने व्यवधान उत्पन्न किया क्योंकि ब्रिटिश सरकार द्वारा आदिवासी, वनवासी के जीवन स्त्रोत, जंगल की जब्ती, उसमें सरकारीकरण और व्यवसायीकरण के कारण विरोध किया। इसके अतिरिक्त अन्य कारणों से भि जनजातियों ने अंग्रेजों का विरोध किया जैसे– अंग्रेजों द्वारा 1864 एवं 1878 का अधिनियम लागू किया। इस अधिनियम को लागू करने का तात्कालिक कारण डलहौजी के समय मुंबई से थाणे तक रेलवे लाइन का विकास करना था। जिसके कारण बांस की मांग बढ़ गई। दूसरा प्रमुख कारण भारतीय सागौन का उपयोग जहाज निर्माण में किया जाता था। चूंकि उस समय इंग्लैंड नेपोलियन से युध्द मे अपनी सुरक्षा चाहता था। अतः नौसेना के जहाजों के सागौन की आपूर्ति बढ़ाई गई। जिससे जंगलों को साफ किया जाने लगा। इससे वनवासियों या जनजातियों के जीवनशैली में अनावश्यक हस्तक्षेप प्रारंभ हो गया। इसके अतिरिक्त आदिवासियों के जीवन निर्वाह या आजीविका के लिए संकट उत्पन्न हो गया। शासन के भूमि सुधार कानूनों ने उन्हें उनकी जमींन से बेदखल कर दिया गया। बढ़ते बाह्य हस्तक्षेप से उनकी सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन हुआ परंतु आदिवासी लोग इन परिवर्तनों को स्वीकार करने में असमर्थ रहे। अंग्रेजों द्वारा उनकी गरीबी का लाभ उठाकर उनका धर्मांतरण किया गया। आदिवासियों को जंगल से निकालकर गांवों में बसाना, इससे ब्रिटिश शासन के प्रति उनका रोष बढ़ता गया। उनके पारंपरिक रीति–रिवाजों में हस्तक्षेप, भू–राजस्व नीतियाँ एवं भूमि का रूपांतरण आदि कारणों के सामूहिक प्रतिउत्तर में जनजातीय लोगों ने समय–समय पर विद्रोह किया। अंग्रेजी व्यवस्था ने आदिवासियों की सामाजिक–आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, और सामाजिक–धार्मिक परंपराओं पर अतिक्रमण किया और उनकी भावना को ठेस पँहुचाई जो असंतोष के रूप तहत विद्रोह के रूप में सामने उपस्थित हुए।

समय, परिस्थिति और क्षेत्र के अनुसार इनके विरोध स्वरूप में अंतर दिखाई देता है। सन 1761 से 1857 तक अंग्रेजी सरकार ने आदिवासियों का अत्यधिक शोषण किया। जिससे भारत के लगभग सभी क्षेत्रोंध्राज्यों मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, तथा मणिपुर की आदिवासी जनजातियों के विद्रोहों को अलग–अलग नाम जाना जाता है। आदिवासी विद्रोह तीन चरणों में हुआ।

1795–1860

1860–1920

1920– उसके बाद

उपरोक्त तीनों चरणों के विभिन्न आदिवासी विद्रोहों का वर्णन निम्नानुसार है।

खोड़ विद्रोह–खोड़ जनजाति के लोग तमिलनाडु से लेकर बंगाल और मध्य भारत तक फैले हुए थे। इनका प्रमुख क्षेत्र छोटा–नागपुर का पठार था। इन्होंने 1837 से 1856 के बीच ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया। विद्रोह का कारण,सरकार द्वारा नए करों को लगाना तथा उनके क्षेत्रों में जमींदारों और साहूकारों का प्रवेश करना था। इस विद्रोह का नेतृत्व आदिवासी नेता चक्र डिसोई ने किया।

संथाल विद्रोह –साँठलों का कार्य क्षेत्र छोटा–नागपुर (बिहार,झारखंड) का पठार था। इन्होंने 1855–56 में भूमिकर अधिकारियों के अत्याचार, आदिवासियों से बेगार, झूम कृषि पर प्रतिबंध के कारण अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह किया। इसका नेतृत्व सिद्धू एवं कानहू ने किया।

कूका विद्रोह – यह विद्रोह पंजाब में हुआ था। भागात जवाहर माल तथा रामसिंह कुक ने इसका नेतृत्व किया था।

मुंडा विद्रोह – सन 1893–1900 के बीच झारखंड में हुआ। इसका नेतृत्व बिरसा मुंडा ने किया। बिरसा मुंडा को स्थानीय आदिवासी भगवान मानते थे। उसे उलगुलान (महान हलचल) की उपाधि दी। इसी कारण इसे उलगुलान विद्रोह भी कहा जाता है। इसने 1899 में दिकुओं के विरुद्ध विद्रोह का आह्वान किया और 6 हजार मुँड़ाओं को एकत्रित कर पुलिस थाना, डाकघर, महाजन, जमींदार पर हमला कर दिया।

रंपा विद्रोह–यह विद्रोह आंध्रप्रदेश में सन 1920–21 में प्रारंभ हुआ। इसका नेतृत्व अलूरी सीताराम राजू ने किया जो रंपा जाति का व्यक्ति न होकर एक ज्योतिषी तथा चिकित्सक था। इसने शराबबंदी कार्यक्रम चलाया तथा ग्राम पंचायतें स्थापित की। अंग्रेजों के विरुद्ध छापामार प्रणाली शुरू की इसके गुरिल्ले दस्ते में 100 व्यक्ति शामिल थे।

खासी विद्रोह–खासी विद्रोह 1829–32 में असाम और मेघालय क्षेत्र में हुआ। इस विद्रोह का कारण घाटी एवं सिल्हट को जोड़ने हेतु एक सैनिक मार्ग के निर्माण हेतु अनेक बाहरी लोगों को ब्रह्मपुत्र घाटी में भेजा। तिरत सिंह तथा वाडमणिक ने इसका नेतृत्व किया। अंत में एक लंबे अभियान के पश्चात अंग्रेजों ने 1833 में इस विद्रोह का दमन कर दिया।

कोल विद्रोह–कोल विद्रोह छोटा नागपुर के पठार में 1831–32 में बुद्धू भगत के नेतृत्व मे हुआ।

कोया विद्रोह –यह विद्रोह 1840–1858 तक आंध्रप्रदेश में रंप क्षेत्र में हुआ। इसके नेता तोमाडोरा थे।

कच्चा नागा विद्रोह–

कच्चानागा विद्रोह असम के कचेर क्षेत्र में 1882 में हुआ। इस विद्रोह के नेता शंबुदान थे। जो पैसे से एक जादूगर थे। उसका दाबा था की वह एक ऐसा जादू जानता है, जिसके बल पर वह अनुयायियों को इस प्रकार बना सकते हैं कि, बंदूक की गोलियां कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

भील विद्रोह –भील विद्रोह महाराष्ट्र के खानदेश क्षेत्र में 1818–1838 के बीच हुआ तथा 1913 में राजस्थान के बांसबाढ़ा और डूंगुरपुर में हुआ। 1913 में गोविंद गुरु ने नेतृत्व किया। 1920–21 में असहयोग आंदोलन के दौरान मोतीलाल तेजाबत के नेतृत्व में राजस्थान में हुआ। यंहा पर मेवाड़ रियासत की फौज ने 1200 भीलों को रौंद दिया। भीलों का सम्मेलन विजयनगर क्षेत्र में हुआ था। इसे राजस्थान का जलियावाला बाग हत्याकांड कहा जाता है।

उरांव विद्रोह– . सन 1914–15 में जांना भगत के नेतृत्व में छोटा नागपुर क्षेत्र में हुआ।

कूकी विद्रोह – कूकी विद्रोह 1917–19 में मणिपुर क्षेत्र में हुआ। इस विद्रोह के नेता जदो नाग थे। रानी गोडेनलयु ने सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान इस क्षेत्र में विद्रोह किया था।

तानाभगत विद्रोह –तानाभगत विद्रोह का आरंभ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान छोटा नागपुर के पठार में हुआ। इसे भागात आंदोलन इसीलिए कहा जाता है क्योंकि इस आंदोलन का नेतृत्व आदिवासी लोगों के बीच उन लोगों ने किया जिन्होंने फकीर या धर्माचार्य का काम किया था। इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता जात्रा भगत और बलराम भगत थे।

चेंचू विद्रोह –चेंचू आंदोलन आंध्रप्रदेश के गुन्टूर जिले में 1920 में असहयोग आंदोलन के समय एक शक्तिशाली जंगल सत्याग्रह के रूप में हुआ।

नायकादा विद्रोह –

यह जनजाति गुजरात क्षेत्र में निवास करती है। इसमें आंदोलनकारियों ने अंग्रेज अधिकारियों और सवर्ण हिंदुओं के विरुध्द दैवीय शक्ति से युक्त अपने नेताओं के नेतृत्व में धर्मराज स्थापित करने की दिशा में एक प्रयास था।

इस प्रकार स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जनजातीय आंदोलन भी सक्रिय रहा जिसमें स्थानीय लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। न केवल ब्रिटिश काल में अपितु वर्तमान में भी आदिवासी लोग स्वतंत्रता प्रिय है। अपनी परंपराओं के अनुसार जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ–

पाल, विपिन चंद्र 2001 भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली

सुमित सरकार, 2009 आधुनिक भारत का इतिहास राजकमल प्रकाशन

Sniha Surajit 1965 Tribe&Cast and Tribe&Peasant Continuua in Central India* Man in India Vol-45

Bose N-K- 1941 The Hindu Method of Tribal Absorption Science and Culture Vol-7

Manapatra L-K- 1968 Social Movements among Tribes in Eastern India with Special Reference to Orissa*-

Orans M- 1965 The Santhal: A Tribe in Search of a Great Tradition Detroit-